Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

लोकतांत्रिक भारत के नव निर्माण में नव माध्यमों का उत्तरदायित्व

- डॉ. राजेश सिंह कुशवाहा
एसोसिएट प्रोफेसर
भारतीय जन संचार संस्थान
पश्चिम क्षेत्रीय परिसर, अमरावती
ई-मेलः manurajchandra@gmail.com

शोध सारांश

किसी सभ्य समाज का दर्पण है मीडिया। यह न केवल जन आशा, आकांक्षा एवं अभिलाषा को स्वरूप प्रदान करती है बल्कि जन-जन के सुख-दुःख में साथ निभाती है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी होने के साथ ही यह जन भावनाओं की अभिव्यक्ति और नैतिकता की पीठिका है। एक प्रजातांत्रिक देश में मीडिया का प्रमुख दायित्व 'वॉचडॉग' यानि प्रहरी और 'एजेंडा-सेटिंग' का है। मीडिया जन-सरोकार से जुड़े विविध एवं बहुआयामी विचारों को रखने का जनमंच भी है, यह एक 'पब्लिक स्फेयर' यानि जनवृत्त या जनवर्ग की तरह कार्य करता है जिससे जनमत तैयार होता है। भारत के नव निर्माण में सूचना संवहन एवं जन-जन की सहभागिता में मीडिया एक उपयोगी साधन है। देशभर के लोगों की सूचना संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति केवल मुख्यधारा की मीडिया पर निर्भर रहकर नहीं की जा सकती। जब तक वंचित और शोषित लोगों को विकास में भागीदार नहीं बनाया जायेगा तब तक राष्ट्र का सही मायनों में समग्र विकास संभव नहीं है। ऐसे में सोशल मीडिया जैसे नव माध्यम एक प्रयोजनपरक साधन है जो संदेश की सम्प्रेषणीयता को सुनिश्चित करती है, साथ ही विकास संचार की पहुंच जन-जन तक सुनिश्चित करती है। न्यू मीडिया के उचित प्रयोग से निरक्षरता, निर्धनता, बेरोजगारी एवं असमानता के उन्मूलन में कारगार मदद मिल सकती है।

मुख्य शब्द: लोकतंत्र, नव माध्यम, वॉचडॉग, एजेंडा-सेटिंग, नव निर्माण।

प्रस्तावना:

भारत की सभ्यता और संस्कृति अनुपम एवं अतुल्य है। समग्र विश्व में बहुआयामी संस्कृति और सामाजिक वैविध्यता की ऐसी मिसाल अन्यत्र कहीं दृष्टिगोचर नहीं होती है। संस्कृति किसी राष्ट्र की नींव की सदृश्य होती है। ऐसी ही सांस्कृतिक विरासत हमारा लोकतंत्र है। लोकतंत्र एक प्रकार की शासन व्यवस्था है, जिसमें प्रत्येक व्यक्ति को समान अधिकार है। एक आदर्श लोकतंत्र वह है जिसमे राजनीतिक और सामाजिक न्याय के साथ-साथ आर्थिक न्याय की

Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

व्यवस्था भी है। देश में ऐसी शासन प्रणाली लोगों को सामाजिक, राजनीतिक तथा धार्मिक स्वतंत्रता प्रदान करती है। नई सदी में मीडिया ने जनमानस पर गहरा प्रभाव छोड़ा है इसमें प्रिंट मीडिया व इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ वेब मीडिया यानि न्यू मीडिया अर्थात नव माध्यमों का नवाचार भी सम्मिलित है। न्यू मीडिया केवल नगरों में ही नहीं वरन सुदूरवर्ती ग्राम्य क्षेत्रों में विकास, जागरूकता तथा शिक्षा का लाभ पहुंचाने वाली एक सर्वग्राही सर्वसुलभ तथा सबसे सस्ते माध्यम के रूप में स्थापित हो रही है। इसने सूचना सम्प्रेषण की सबसे बड़ी बाधा जो ग्रामीण विकास के मामले में आती थी, को लगभग समाप्त कर दिया है। ग्रामीण इलाकों में केन्द्र एवं प्रदेश दोनों ही सरकारों द्वारा इसके तेजी से इस्तेमाल पर बल दिया जा रहा है। सोशल मीडिया लोगों की अभिव्यक्ति को प्रबल करती हैं परन्तु कई बार किसी के भी द्वारा इसका गलत इस्तेमाल अफवाहों और गलत सूचनाओं के प्रसार के लिए किया जा सकता है। सोशल मीडिया ने लोगों को बेहतर सूचना हेतु सक्षम तो बनाया है लेकिन उन्हें बहकाना भी आसान बना दिया है। अभिव्यक्ति व्यवस्था (Governance of Speech) को लोकतांत्रिक प्रक्रिया के दायरे में लाने के लिए और सोशल मीडिया को नियंत्रित करने के लिये पारदर्शिता और विनियमन लाने की जरूरत है। डेटा को नियंत्रित करना भी एक बड़ा सवाल है।

उद्देश्य:

- भारतीय लोकतंत्र में नव माध्यमों की भूमिका का अध्ययन।
- भारत के नव निर्माण में नव माध्यमों के उत्तरदायित्व का अध्ययन।

शोध विधि:

इस अनुसंधान में विश्लेषणात्मक प्रविधि का उपयोग किया गया है। अनुसंधान समस्या के अध्ययन के लिए प्राथमिक सामग्री के लिए नव माध्यम एवं प्रौद्योगिकी का विश्लेषण और द्वितीयक सामग्री के लिए उपलब्ध साहित्य सामग्री का पुनरावलोकन किया गया है।

लोकतंत्र की अवधारणा:

भारतीय लोकतंत्र में चार मूलभूत सिद्धांतों: स्वतंत्रता, समानता, बंधुता और न्याय को प्रतिष्ठापित किया गया है। भारतीय संविधान की प्रस्तावना में कहा गया है कि इन आधारभूत सिद्धांतों के अतिरिक्त लोकतंत्र में आत्मसम्मान की भावना, सहयोग और उत्तरदायित्व की भावना आदि विचार भी समाहित हैं। 'लोकतंत्र शब्द बोलने में छोटा परंतु इसका अर्थ उतना ही बड़ा और जटिल निकलता है। डेमोक्रेटिक शब्द यूनानी भाषा के डेमोस (Demos) और क्रातोस(kratos) दो शब्दों से मिलकर बना है, जिसका अर्थ होता है लोग और शासन, शाब्दिक अर्थ में जनता का शासन। लोकतंत्र की परिभाषा के अनुसार यह "जनता द्वारा, जनता के लिए, जनता का शासन है"। अर्थात प्रजातंत्र एक

Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

ऐसी शासन प्रणाली है, जिसके अंतर्गत जनता अपनी इच्छा से निर्वाचन में आए हुए किसी भी दल को अपना वोट देकर अपना प्रतिनिधि चुन सकती है और उनकी सरकार बना सकती है।'[1]

लोकतंत्र के इतने रूप हैं कि इसकी एक निश्चित परिभाषा देना बहुत ही कठिन है। समय, परिस्थितियों, विभिन्न हितों की आवश्यकता के अनुसार विभिन्न युगों के विचारकों के लोकतंत्र के बारे में विविध मत हैं:

""यूनानी दार्शनिक वलीआन: "लोकतंत्र वह होगा जो जनता का, जनता के द्वारा हो, जनता के लिए हो।"

लावेल: "लोकतंत्र शासन के क्षेत्र में केवल एक प्रयोग है।"

अमेरिकी राष्ट्रपति अब्राहम लिंकन: "लोकतंत्र जनता का, जनता के लिए तथा जनता द्वारा शासन है।"

लॉर्ड ब्राइस: "प्रजातंत्र वह शासन प्रणाली है जिसमें की शासन शक्ति एक विशेष वर्ग या वर्गों में निहित ना रहकर समाज के सदस्य में निहित होती है।"

जॉनसन: "प्रजातंत्र शासन का वह रूप है जिसमें प्रभुसत्ता जनता में सामूहिक रूप से निहित हो।"

ऑस्टिन:"प्रजातंत्र वह शासन व्यवस्था है जिसमें जनता का अपेक्षाकृत बड़ा भाग शासक होता है।"

सारटोरी: "लोकतंत्रीय व्यवस्था वह है जो सरकार को उत्तरदायी तथा नियंत्रणकारी बनाती है तथा जिसकी प्रभावकारिता मुख्यतः इसके नेतृत्व की योग्यता तथा कार्यक्षमता पर निर्भर है।""[2]

भारतीय लोकतंत्र में मीडिया के प्रयोजन का विश्लेषण:

मीडिया लोकतंत्र का चौथा स्तंभ है इस कारण से लोकतांत्रिक व्यवस्था में इसकी भूमिका और महत्वपूर्ण हो जाती है। मीडिया की विश्वसनीयता जनता के सरोकारों और जन विश्वास पर ही टिकी होती है। मीडिया राष्ट्रीय संसाधन है। जिसे पत्रकार बंधु जन विश्वास या ट्रस्ट में प्रयोग करते हैं। वर्तमान समय में मीडिया की उपयोगिता, महत्त्व एवं भूमिका निरंतर बढ़ती जा रही है। कोई भी समाज, सरकार, वर्ग, संस्था, समूह व्यक्ति मीडिया की उपेक्षा कर आगे नहीं बढ़ सकता। आज के जीवन में मीडिया एक अपरिहार्य आवश्यकता बन गया है। सभ्य समाज का दर्पण है मीडिया। यह न केवल जन आशा, आकांक्षा एवं अभिलाषा को स्वरूप प्रदान करती है बल्कि जन-जन के सुख-दुःख में साथ निभाती है। संस्कृति, सभ्यता और स्वतंत्रता की वाणी होने के साथ ही यह जन भावनाओं की अभिव्यक्ति और नैतिकता की पीठिका है। मीडिया में समाज की वास्तविक संस्कृति प्रतिबिम्बित होती है और सांस्कृतिक साक्षरता में इसकी विशिष्ट भूमिका होती है। किसी भी समाज के नव निर्माण और जन-जन की बात जन-जन तक पहुंचाने में मीडिया की बड़ी भूमिका है। इस दिशा में बाबासाहब भीमराव आंबेडकर की पत्रकारिता एक प्रतिमान है। 'बाबासाहब के समाचार-पत्र 'मूकनायक' का

Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

पहला अंक 31 जनवरी 1920 को निकला, जबकि अंतिम अखबार 'प्रबुद्ध भारत'का पहला अंक 4 फरवरी, 1956 को प्रकाशित हुआ। इसके बीच में 'बहिष्कृत भारत' का पहला अंक 3 अप्रैल 1927 को, 'समता' का पहला अंक 29 जून 1928 को और 'जनता' का पहला 24 नवंबर 1930 को प्रकाशित हुआ। उन्होंने इस बात की घोषणा की थी कि उनका अखबार एक समाज के नवनिर्माण के लिए है, जिसमें कोई किसी का अहित न करे और सबके हितों की रक्षा हो।'[3]

मीडिया अपनी भूमिका द्वारा समाज में शांति, सौहार्द, समरसता और सौजन्य की भावना विकसित कर सकता है। राष्ट्र के प्रति भक्ति एवं एकता की भावना को उभारने में भी मीडिया की अहम भूमिका होती है। 'शहीदों के सम्मान में प्रेरक उत्साहवर्द्धक खबरों के प्रसारण में मीडिया को बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना चाहिए। मीडिया विभिन्न सामाजिक कार्यों द्वारा समाज सेवक की भूमिका भी निभा सकता है। भूकंप, बाढ़ या अन्य प्राकृतिक या मानवकृत आपदाओं के समय जनसहयोग उपलब्ध कराकर मानवता की बहुत बड़ी सेवा कर सकता है। मीडिया को सद्प्रवृत्तियों के अभिवर्धन हेतु भी आगे आना चाहिए।'[4]

भारतीय मीडिया चाहे वो प्रिन्ट हो या इलेक्ट्रॉनिक, इसी खुली, उदार और समावेशी चरित्र वाली संस्कृति के साथ विकसित हो रही है। यह तो सर्वमान्य है कि मीडिया समाज का आईना है। गांधी की दुनिया से लेकर ग्लोबल दुनिया तक जो कुछ बदला है लगभग उसी तरह के बदलाव मीडिया में भी दिखाई पड़ते हैं। यह परिवर्तन मुख्यधारा के मीडिया के साथ भाषाई पत्रकारिता में भी देखने को मिल रहा है। राजनैतिक, आपराधिक, आर्थिक, खेल के साथ-साथ पापुलर कल्चर और लाइफ स्टाइल के विषयों को भी परोसा जा रहा है। मीडिया में समाज की सच्चाई के साथ ही कटु वास्तविकता भी परिलक्षित होती है। एक शोध पत्र 'Role of Media in Strengthening Democracy in India' में यह स्पष्ट रूप से वर्णित है: ^A democracy without media is like a vehicle without wheels. The media has undoubtedly evolved and become more active over the years. Media makes us aware of several social, political and economic activities happening around the world. It is like a glass, which reflects us or attempts to show us the bare truth and harsh realities of life'.[5]

एजेंडा सेटिंग सिद्धांत के अनुसार मीडिया जनमत के उपर एक खास प्रभाव छोड़ता है। लोगों को मुद्दों कि जानकारी मीडिया द्वारा ही होती है। मीडिया जनमत निर्माण एवं जनमत परिवर्तन में भी महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। सुशासन एवं जागरूक लोकतंत्र हेतु मीडिया की बड़ी प्रमुख जिम्मेदारी बनती है। 'एक प्रजातांत्रिक देश में मीडिया का प्रमुख दायित्व 'वॉचडॉग' यानि प्रहरी और 'एजेंडा-सेटिंग' का है। मीडिया जन-सरोकार से जुड़े विविध एवं बहुआयामी विचारों को रखने का जनमंच भी है, यह एक 'पब्लिक स्फेयर' यानि जनवृत्त या जनवर्ग की तरह कार्य करता है जिससे जनमत तैयार होता है।'[6]

Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

वर्तमान में भारतीय मुख्यधारा की मीडिया के प्रबंधन एवं स्वामित्व में पूँजीपति घरानों की प्रत्यक्ष भूमिका दिखती है। मीडिया जहां सूचना एवं जागरूकता का साधन हुआ करता था, वह अब प्रचार, जनसम्पर्क या सम्पर्क प्रबंधन का साधन मात्र बन गया है। ऐसे स्थिति-परिस्थिति में सोशल मीडिया से बहुत उम्मीदें हैं। सोशल मीडिया एक विशाल नेटवर्क है, जो कि सारे संसार को जोड़े रखता है। यहां द्रुत गति से आडियो, वीडियो और टेक्स्ट सूचनाओं का आदान-प्रदान किया जाता है। सोशल मीडिया मुख्यधारा की मीडिया के लिए एफ0आई0आर0 का काम करती है। सोशल मीडिया के जरिए लोकतंत्र को समृद्ध और जागरूक बनाने का कार्य हुआ है जिससे देश की एकता, अखंडता, पंथनिरपेक्षता, समाजवादी गुणों में अभिवृद्धि होती है।

देशभर के लोगों की सूचना संबंधी आवश्यकताओं की पूर्ति केवल मुख्यधारा की मीडिया पर निर्भर रहकर नहीं की जा सकती। जब तक वंचित और शोषित लोगों को विकास में भागीदार नहीं बनाया जायेगा तब तक राष्ट्र का सही मायनों में समग्र विकास संभव नहीं है। ऐसे में सोशल मीडिया एक प्रयोजनपरक साधन है जो संदेश की सम्प्रेषणीयता को सुनिश्चित करती है, साथ ही विकास संचार की पहुंच जन-जन तक सुनिश्चित करती है।

नई सदी में मीडिया ने जनमानस पर गहरा प्रभाव छोड़ा है इसमें इलेक्ट्रॉनिक मीडिया के साथ-साथ प्रिण्ट मीडिया का नवाचार भी सम्मिलित है। इसी परिप्रेक्ष्य में प्रेस परिषद के पूर्व अध्यक्ष न्यायमूर्ति जी0एन0 रे ने एक सम्मेलन में अपने सम्बोधन में उद्धृत किया है: ^^The Press in today's media scenario has become instrumental in setting the political, economic, social and cultural agenda of the country. Media has acquired such great control on the mind of the masses that it now controls and shapes the liking, disliking and interest in different segments of news items to a considerable extent. The Indian press is going through transformation because of changes occurring in today's polity of the country on account of rapid socio economic strides. Liberalization, globalization, and competition from the electronic media are impelling the print media to adapt new technologies, with more professional out look and sensitivity to the market forces."[7]

परिवर्तन प्रकृति का नियम है। इसी शाश्वत नियम से रीति हो या फिर नीति, सभी को एक वक्त के बाद घुटने टेकने पड़ते हैं। यह बात मीडिया संसाधनों पर भी लागू होती है। आज के मीडिया को कल को पुराना होना ही है। प्रगतिशील समाज सतत परिवर्तन और परिमार्जन को प्राथमिकता देता है।

Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

भारत नव निर्माण में नव माध्यमों के उत्तरदायित्व का विश्लेषण:

देश में आज यक्ष प्रश्न सबके समक्ष है, न्यू इंडिया की चुनौती का। 'आजादी के वक्त साक्षरता दर लगभग 12 प्रतिशत थी जो वर्ष 2011 की जनगणना में बढ़कर 74.04 प्रतिशत हो चुकी है।'[8] लेकिन अब साक्षरता केवल लिखने-पढ़ने तक सीमित नहीं है, न्यू मीडिया के आगमन से साक्षरता के मायने बदल गए हैं। नोटबन्दी में न्यू मीडिया या डिजिटल साक्षर लोगों को लेन-देन में अन्य की अपेक्षा कम परेशानियों का सामना करना पड़ा। डिजिटल साक्षरता से आनलाइन सेवाओं की उपयोगिता बढ़ी है और लेन-देन में सहूलियत के साथ पारदर्शिता भी आयी है। इसी का नतीजा है कि डिजिटल पहुंच एवं आधारलिंक से भारत सरकार को बड़ी धनराशि की बचत भी हुई है।

नव माध्यम अर्थात न्यू मीडिया एक अत्याधुनिक संचार माध्यम हैं, जिसका अनुसरण व अनुकरण दुनिया भर के लोग कर रहे हैं, वहीं न्यू इंडिया बनाने की कवायद में देश भर में शासन-प्रशासन सतत प्रयत्नशील है। नवीनता, सृजनात्मकता एवं सहभागिता नव माध्यमों की स्वाभाविक प्रवृत्तियां हैं। न्यू मीडिया ने सम्प्रेषण की नई परिभाषा ही नहीं गढ़ा है बल्कि नए कलेवर में प्रस्तुत करने की कला का भी आविष्कार किया है। मानव और मीडिया के रिश्ते को नई अभिव्यक्ति मिली है। न्यू मीडिया पर आधारित वैश्विक संचार पर बंधन या किसी तरह का प्रतिबन्ध प्रभावी नहीं रह गया है। सूचनाओं को प्रतिपल प्रतीक्षा की जगह पल-पल परिवर्द्धित व परिमार्जित सूचनाओं के चयन की स्थितियां विकसित हो गई है। सही मायने में इस नई सदी में सूचनाएं चौबीसों घंटे उपलब्ध है। सूचनाओं के विकल्प उपलब्ध है उनके प्राप्ति के विविध माध्यम एवं तरीके भी उपलब्ध है। किसी समय कहीं भी किसी डिजिटल इंटरैक्टिव डिवाइस के माध्यम से सूचना सामग्री को प्राप्त किया जा सकता है। साथ ही साथ विषय सामग्री में रचनात्मक भागीदारी एवं समुदाय निर्माण के लिए भी अवसर मिलता है। न्यू मीडिया का एक दूसरा जो प्रबल पक्ष है वह है मीडिया सामग्री की संरचना, प्रकाशन, वितरण एवं उपभोग का लोकतंत्रीकरण। यह विशेषता परम्परागत मीडिया से बिल्कुल भिन्न है। न्यू मीडिया का गतिशील पहलू यह है कि यह रियल टाइम में संपादित प्रकाशित एवं वितरित हो सकता है।

लोकतांत्रिक मूल्यों के संरक्षण में जन-जन की भागीदारी सुनिश्चित करने में न्यू मीडिया की निर्णायक भूमिका है। न्यू मीडिया में अमीर-गरीब सभी को समान अवसर एवं हिस्सेदारी है। सर्वसुलभता का अनुपम उदाहरण है सोशल मीडिया, जिसके द्वार सभी की अभिव्यक्ति के लिए खुले हैं। इसी दृष्टिकोण से प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने उमंग(यूनीफाइड मोबाइल ऐप्लिकेशन फॉर न्यू-एज गवर्नेंस) एप्प जारी किया है। इस एक ही ऐप में अलग-अलग सरकारी विभागों की 100 से ज्यादा सेवाएं उपलब्ध हैं। इसमें केंद्र, राज्य, स्थानीय निकाय और विभिन्न सरकारी एजेंसियों की सेवाएं मिलेंगी। इसके अलावा इस ऐप में वो सभी बड़ी सरकारी सेवाएं एक जगह मिल जाएंगी जो अभी ऐप, वेब, एसएमएस और आईवीआर के जरिए मिलती हैं। ई-गवर्नेंस की बात करें तो उमंग ऐप को टैक्स भरने, एलपीजी सिलेंडर बुक करने और

Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

पीएफ अकाउंट के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। इसके अलावा सीबीएसई रिजल्ट को भी ऐप के जरिए देखा जा सकता है। यह ऐप हिंदी और अंग्रेजी के अलावा 10 भारतीय भाषाओं को सपोर्ट करती है।'[9]

न्यू मीडिया की पहुंच जनमानस तक होने का लाभ यह है कि प्रत्येक नागरिक अब वाचडॉग की भूमिका में है। स्वस्थ समाज की रचना का मूल आधार है भ्रष्टाचार का मूल से विनाश, इस धर्मयुद्ध में प्रत्येक नागरिक योद्धा बनकर अपना योगदान दे सकता है। न्यू मीडिया की कोई सीमा नहीं है, इसका लाभ है तो कुछ खतरा भी है। अक्सर हमें जालसाजी एवं हैकिंग की वारदातें सुनने को मिलती हैं। साइबर हमलों एवं अपराधियों से सजग रहने की जरूरत है।

सूचना का किसी लोकतांत्रिक देश के लिए बेहद जरूरी है, इस तथ्य का उद्धरण एक अमेरिकी रिपोर्ट में कुछ इस भांति हैः 'Access to information is essential to the health of democracy for at least two reasons. First, it ensures that citizens make responsible, informed choices rather than acting out of ignorance or misinformation. Second, information serves a "checking function" by ensuring that elected representatives uphold their oaths of office and carry out the wishes of those who elected them.'[10]

भारत के नव निर्माण में सूचना संवहन एवं जन-जन की सहभागिता में न्यू मीडिया एक प्रयोजनपरक साधन है। न्यू मीडिया केवल नगरों में ही नहीं वरन सुदूरवर्ती ग्राम्य क्षेत्रों में विकास, जागरूकता तथा शिक्षा का लाभ पहुंचाने वाली एक सर्वग्राही सर्वसुलभ तथा सबसे सस्ते माध्यम के रूप में स्थापित हो रही है। इसने सूचना सम्प्रेषण की सबसे बड़ी बाधा जो ग्रामीण विकास के मामले में आती थी, को लगभग समाप्त कर दिया है। ग्रामीण इलाकों में केन्द्र एवं प्रदेश दोनों ही सरकारों द्वारा इसके तेजी से इस्तेमाल पर बल दिया जा रहा है।

निष्कर्षः

प्रहरी के रूप में मीडिया की भूमिका एक पारंपरिक लक्षण है। विकास के लिए यह एक प्रमुख घटक भी है। स्वतंत्र, तटस्थ और सक्रिय मीडिया के बिना लोकतंत्र अर्थहीन है। मीडिया ने समय-समय पर लोगों को जीवन की कठोर वास्तविकताओं से अवगत कराने, हमारे समाज में व्याप्त भ्रष्टाचार को उजागर करने, लोगों में जागरूकता के स्तर को बढ़ाने और बहुत कुछ करने में सराहनीय काम किया है। नव माध्यमों के उचित प्रयोग से निरक्षरता, निर्धनता, बेरोजगारी एवं असमानता के उन्मूलन में कारगार मदद मिल सकती है। कृषि आधारित उद्योगों, कृषि विविधीकरण, उन्नत प्रणालियों, अद्यतन सूचनाओं को उपलब्ध कराकर समृद्धि लायी जा सकती है। वास्तव में न्यू इंडिया के स्वप्न को न्यू मीडिया ही साकार कर सकती है अर्थात सशक्त, सुखी एवं सम्पन्न भारत का निर्माण।

Year-4 Volume: IV, October-December, 2022 Issue-16 ISSN: 2582-1296 (Online)
The Asian Thinker
A Quarterly Bilingual Peer-Reviewed Journal for Social Sciences and Humanities
Website: www.theasianthinker.com Email: asianthinkerjournal@gmail.com

संदर्भ स्रोत:

1. https://leverageedu.com/blog/hi/loktantra-kya-hai/
2. https://leverageedu.com/blog/hi/loktantra-kya-hai/
3. https://www.forwardpress.in/2020/01/mooknayak-100-years-journalism-ambedkar-hindi/
4. https://www.drishtiias.com/hindi/model-essays/role-of-media-in-society
5. https://journals.indexcopernicus.com/api/file/viewByFileId/220930.pdf
6. http://newswriters.in/development-of-media/
7. http://presscouncil.nic.in/OldWebsite/speechpdf/November%2016%202009%20Hyderabad.pdf
8. भारत-2022, प्रकाशन विभाग, नई दिल्ली।
9. https://web.umang.gov.in/landing/
10. The Role of Media in Democracy: A Strategic Approach, Center for Democracy and Governance, Washington, D.C, June1999

The Asian Thinker